International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 2; Issue 8; August 2016; Page No. 41-42

चित्रकूट जनपद : पर्यटन केन्द्रों का प्रादेषिक वितरण और उनका महत्व

महेश चन्द्र कटियार

सहायक अध्यापक भूगोल, पं॰ पुरुषोत्तम द्विवेदी इण्टर कालेज मऊ, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांष

पर्यटन केन्द्रों से आशय ऐसे स्थानों है, जो सजीवता, रमणीयता, अद्भुत–प्रकृति, रोमांच व आकर्षण जैसे गुणों से परिपूर्ण हो, लोगों के लिए ऐसे स्थान आदिकालसे ही ज्ञान, दर्शन, जिज्ञासा, कौतूहल आदि के विषय रहे है। पर्यटन के घटकों में स्थानीय दर्शनीय– स्थल, यातायात व संचार के साधन, आवास तथा मनोरंजन आदि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके साथ ही पर्यटकों को दी जाने वाली सुविधाएँ, आधारभूत सुविधाएँ – होटल, खानपान, क्रीड़ा, ऐतिहासिक भवन व इमारतें, खरीददारी – केन्द्र, वित्तीय संस्थाएँ, परिवहन क्षमता, अतिथि सत्कार संबंधी सुविधाएँ, यात्रा के दौरान सुविधाएँ व सरकार की भूमिका आदि का भी महत्व है।

मूलशब्द: चित्रकूट जनपद, पर्यटन केन्द्र, प्रादेशिक वितरण, महत्व

प्रस्तावना

वर्तमान समय में आधुनिक जीवन शैली एवं भौतिकतावादी समाज में मानव–जीवन मशीन की तरह बनकर रह गया है। लोगों को अपने बारे में सोचने की फुरसत नहीं है। जीवन में सर्वत्र चिंता, कमाने की अंधी दौड़, प्रसिद्धि की चाहत एवं स्वार्थपरता का महौल हैं। ऐसे में येस्थल कुछ पलों के लिए ही सहीं, लोगों को सुकून एवं ताजगी से भर देते हैं। जिज्ञासुओं को सोचने पर विवश कर देते हैं। लोगों को जीविकोपार्जन का साधन प्रदान करते है। इतिहास से सबक लेकर सबको साथ लेकर चलने के साथ ही लोगों को जोड़ने एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को भी जागृत करते हैं। विगत कुछ दशकों में वैश्विक–स्तर पर पर्यटन केन्द्रों की महत्ता एवं लोगों के बढ़ते रुझान के कारण सरकार और समाज ने भी इस ओर ध्यान देना आरंभ कर दिया है। फलस्वरूप यह आज संगठित उद्योग के रूप में स्थापित हो गया है।

पर्यटन आज देश और क्षेत्रीय स्तर पर सरकारी आय का मुख्य जरिया बन गया है। इसके बढ़ते महत्व के कारण लोगों को जागरुककरने व नवीन खोजों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विद्यालयीन पाठ्यक्रमों के साथ–साथ आधुनिक संचार प्रणाली से भी जोड़ा जा रहा है।

चित्रकूट जनपद की स्थिति 25ण्1094° छए 81ण्0755° म है यहाँ की जलवायु मौसमी है। यहाँ गर्मी में अधिक गर्मी तथा ठण्डी के मौसम मे अधिक ठण्डी पड़ती है। इस कारण से यहाँ कृषि का कार्य एक समान नही हो पाती है।

चित्रकूट धाम मंदाकिनी नदी के किनारे पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थस्थलों में एक है। उत्तर प्रदेश में 38.2 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला शांत और सुन्दर चित्रकूट प्रकृति और ईश्वर की अनुपम देन है। चारों ओर से विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं और वनों से घिरे चित्रकूट को अनेक आश्चर्यों की पहाड़ी कहा जाता है। मंदाकिनी नदी के किनारे बने अनेक घाट और मंदिर में पूरे साल श्रद्धालुओं का आना–जाना लगा रहता है।

आवागमन

1 वायु मार्ग

चित्रकूट का नजदीकी एमरपोर्ट इलाहाबाद है। खजुराहो चित्रकूट से 185 कि.मी. दूर है। चित्रकूट में भी हवाई पट्टी बनकर तैयार है लेकिन यहाँ से उड़ानें अभी शुरू नहीं हुई हैं। लखनऊ और इलाहाबाद हवाई अड्डों से भी चित्रकूट पहुंचा जा सकता है।

2 रेलमार्ग

चित्रकूट से 8 कि.मी. की दूरी कर्वी निकटतम रेलवे स्टेशन है। इलाहाबाद, जबलपुर, दिल्ली, झांसी, हावड़ा, आगरा, मथुरा, लखनऊ, कानपुर, ग्वालियर, रायपुर, कटनी, मुगलसराय, वाराणसी आदि शहरों से यहाँ के लिए रेलगड़ियाँ चलती हैं।

3 सड़क मार्ग

चित्रकूट के लिए इलाहाबाद, बांदा, झांसी, महोबा, कानपुर, छतरपुर, सतना, फैजाबाद, लखनऊ, मैहर आदि शहरों से नियमित बस सेवाएँ हैं। दिल्ली से भी चित्रकूट के लिए बस सेवा उपलब्ध है।

यहाँ की संस्कृति, कला एवं पर्यटन केन्द्रों की पहचान देश–विदेशों तक है। इन पर्यटन केन्द्रों का विवरण एवं महत्व निम्नानुसार है–

कामदगिरि

इस पवित्र पर्वत का काफी धार्मिक महत्व है। श्रद्धालु कामदगिरि पर्वत की 5 कि.मी. की परिक्रमा कर अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण होने की कामना करते हैं। जंगलों से घिरे इस पर्वत के तल पर अनेक मंदिर बने हुए हैं। चित्रकूट के लोकप्रिय कामतानाथ और भरत मिलाप मंदिर भी यहीं स्थित है।

रामघाट

मंदाकिनी नदी के तट पर बने रामघाट में अनेक धार्मिक क्रियाकलाप चलते रहते हैं। घाट में गेरुआ वस्त्र धारण किए

साधु–सन्तों को भजन और कीर्तन करते देख बहुत अच्छा महसूस होता है और शाम हो होने वाली यहाँ की आरती मन को काफी सुकून पहुंचाती है।

जानकी कुण्ड

रामघाट से 2 कि.मी. की दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनारे जानकी कुण्ड स्थित है। जनक पुत्री होने के कारण सीता को जानकी कहा जाता था। माना जाता है कि जानकी यहाँ स्नान करती थीं। जानकी कुण्ड के समीप ही राम जानकी रघुवीर मंदिर और संकट मोचन मंदिर है।

स्टफिक शिला

जानकी कुण्ड से कुछ दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनारे ही यह शिला स्थित है। माना जाता है कि इस शिला पर सीता के पैरों के निशान मुद्रित हैं। कहा जाता है कि जब वह इस शिला पर खड़ी थीं तो जयंत ने काक रूप धारण कर उन्हें चोंच मारी थी। इस शिला पर राम और सीता बैठकर चित्रकूट की सुन्दरता निहारते थे।

अनुसुइया आश्रम

स्टफिक शिला से लगभग 4 कि.मी की दूरी पर घने वनों से घिरा यह एकान्त आश्रम स्थित है। इस आश्रम में अत्रि मुनि, अनुसुइय, दत्तात्रेयय और दुर्वाशा मुनी की प्रतिमा स्थापित हैं।

गुप्त गोदावरी

नगर से 18 कि.मी. की दूरी पर गुप्त गोदावरी स्थित हैं। यहाँ दो गुफाएँ है– एक गुफा चौड़ी और ऊंची है। प्रवेश द्वार संकरा होने के कारण इसमें आसानी से नहीं घुसा जा सकता है। गुफा के अंत में एक छोटा तालाब है जिसे गोदावरी नदी कहा जाता है। दूसरी गुफा लंबी और संकरी है जिससे हमेशा पानी बहता रहता है। कहा जाता है कि इस गुफा के अंत में राम और लक्ष्मण ने दरबार लगाया था।

हनुमान धारा

पहाड़ी के शिखर पर स्थित हनुमान धारा में हनुमान की एक विशाल मूर्ति है। मूर्ति के सामने तालाब में झरने से पानी गिरता है। कहा जाता है कि यह धारा श्रीराम ने लंका दहन से आए हनुमान के आराम के लिए बनवाई थी। पहाड़ी के शिखर पर ही 'सीता रसोई' है। यहाँ से चित्रकूट का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है।

भरत कूप

कहा जाता है कि भगवान राम के राज्याभिषेक के लिए भरत ने भारत की सभी नदियों से जल एकत्रित कर यहाँ रखा था। अत्रि मुनि के परामर्श पर भरत ने जल एक कूप में रख दिया था। इसी कूप को भरत कूप के नाम से जाना जाता है। भगवान राम को समर्पित यहाँ एक मंदिर भी है।

गणेष बाग

करबी से डेढ़ कि.मी. दक्षिण में देश के प्राचीन गौरव तथा समृद्धि का प्रतीक–स्वरूप गणेश बाग पेशवा नरेशों की कीर्ति संजोये खड़ा है। इसका निर्माण उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में श्रीमन्त विनायकराव पेशवा ने अपने आमोद–प्रमोद के लिए कराया था। यहां की इमारतों का निर्माण भारतीय स्थापात्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। बीच में प्राचीन शैली का भव्य षट्कोणी पंचमन्दिर है, जिसके ऊपरी भाग में भित्ति–प्रस्तरों की बारीक कटाई करके 'खजुराहों' की भांति देव–देवताओं की असंख्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गयी है। सामने एक सरोवर है, जिससे इसकी शोभा और भी बढ़ गयी है। पश्चिमी भाग में एक बड़ा ही भव्य जलाशय है, जिसमें कूप और वापी का सुन्दर सम्मिश्रण है। यह तीन खण्डों का है और इसके दो खण्ड प्रायः पानी से भरे रहते है। गर्मियो में दूसरा खण्ड भी खुल जाता है। पर सरकार द्वारा विधनतः संरक्षित–इमारत घोषित किये जाने के बाद सुरक्षा तथा मरम्मत के अभाव में भारतीय शिल्प माला का अद्भुत नमूना धीरे–धीरे धराशायी होता हुआ स्मृति शेष ही रह जाता दिख रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सदियों से हिंदुओं की आस्था का केन्द्र चित्रकूट वही स्थान है, जहाँ कभी भगवान श्रीराम ने देवी सीता और लक्ष्मणजी के साथ अपने वनवास के साढ़े ग्यारह वर्ष बिताए थे। असल में कर्बी, सीतापुर, कामता, खोही और नयागांव के आस–पास का वन क्षेत्र चित्रकूट के नाम से विख्यात है। त्रिकूट – चित्र और कूट शब्दों के मेल से बना है। संस्कृत में चित्र का अर्थ है अशोक और कूट का अर्थ है शिखर या चोटी। चूंकि इस वन क्षेत्र में कभी अशोक के वृक्ष बहुतायत में मिलते थे, इसलिए इसका नाम चित्रकूट पड़ा। चित्रकूट की महत्ता का वर्णन पुराणों के प्रणेता वेद व्यास, आदिकवि कालिदास, संत तुलसीदास तथा कविवर रहीम ने भी अपनी कृतियों में किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खत्री, हरीश– पर्यटन भूगोल, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, म. प्र.।
2. दीक्षित, के.के. एवं गुप्ता जे.पी. – पर्यटन के विविध आयाम।
3. वत्रा, जी.एस. – टूरिज्म प्रोमोशन एण्ड डेवलमेन्ट नई दिल्ली।
4. स्वयं प्रत्यक्ष रूप से देखा और निरीक्षण किया।
5. समाचार पत्रों के माध्यम से।
6. देवभूमि समाचार (हिन्दी न्यूज पोर्टल)